

पद १५२

(राग: सारंग - ताल: चौताल)

भज हो शिवरूप अखिल भूप, आतम सुखनिधान जगत भान
महामौन सताकाश, निजप्रकाश, एक सघन ॥ध्रु.॥ तू है ब्रह्म
निराकार, संतन सुख सुनले सार, महावाक्य दे आधार निगम
ज्ञान ॥१॥ अस्ति भाति प्रिय उदंड, महामौन सुख अखंड, चिन्मय
गुरुमार्तांड सा रे म प नी सा रे म प रे सा नी राबरन ॥२॥